Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN(o): 2581-6241
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 6.471
Volume - 6, Issue - 8, August - 2023 Publication Date: 31/08/2023

DOIs:10.2018/SS/202308012 --:-- Research Paper / Article / Review

बहु- माध्यम उपागम का दिव्यांग विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभावशीलता का अध्ययन

Anil Kumar
Research Scholar, School of Teacher Education, C.S.J.M. University, Kanpur, India
Email – anilkumar351990@gmail.com

सारांश: शिक्षा व्यक्ति के व्यक्तित्व को प्रभावित व परिमार्जित कर उसे अपने वातावरण से समायोजन करने में सहायता करती है। व्यक्ति के जीवन को सुगम बनाती है, जिससे व्यक्ति स्वयं, समाज व देश के लिए उपयोगी साबित होता है। ऐसे ही व्यक्ति नागरिक के रूप में किसी भी राष्ट्र की उन्नति के लिए अति आवश्यक है। शिक्षा के महत्व को देखते हुए शिक्षा को सभी की पहुँच में रखने के लिए वैश्विक स्तर पर नियम बनाये गए। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए शिक्षा को विश्व के अधिकांश देशों में अधिकार का दर्जा दिया गया है। इसी सन्दर्भ में भारतीय संविधान की संशोधित धारा 21(क) को उदहारण के रूप में देखा जा सकता है। इस अधिकार के दायरे में सभी धर्म, जाति, समुदाय, वर्ग व श्रेणी के लोग शामिल है। उन्ही में से एक श्रेणी विकलांग/दिव्यांग की है, जो शारीरिक व मानसिक रूप से कारणवश निःशक्त होते है। दिव्यांग बच्चो को गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा प्रदान करके उन्हें सामान्य जीवन जीने में मदद कर उन्हें समाज में सम्मान से जीने का अधिकार देना मानवाधिकार के अन्तर्गत आता है। इसलिए प्रस्तुत शोध अध्ययन में दिव्यांग बच्चों की शिक्षा को और अधिक प्रभावशील बनाने के उद्देश्य से लोकोमोटर दिव्यांग बच्चों की शिक्षा पर बहुमाध्यम उपागम प्रणाली का क्या प्रभाव है को जानने का प्रयास किया गया है। इसके अन्तर्गत प्रयोगात्मक शोध प्रविधि का प्रयोग करते हुए अस्थि दिव्यांग छात्रों के दो समूहों का चयन किया गया जिसमे से एक समूह पर परम्परागत शिक्षण विधि का प्रयोग किया गया है तथा दूसरे समूह पर बहुमाध्यम उपागम का प्रयोग करते हुए शिक्षण कार्य किया गया। प्रयोग के बाद दोनों समूहों के छात्रों के प्राप्तांकों के सांख्यकीय विश्लेषण के आधार पर यह पाया गया कि बहुमाध्यम उपागम लोकोमोटर दिव्यांग छात्रों की शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में परम्परागत उपागम प्रणाली से अधिक प्रभावशाली है। इसलिए अस्थि दिव्यांग छात्रों की शिक्षा में लगे शिक्षकों को मल्टीमीडिया का अधिकाधिक उपयोग करना चाहिए।

मूल शब्द: बहु माध्यम उपागम, परम्परागत उपागम, दिव्यांग, शैक्षिक उपलब्धि ।

1. प्रस्तवना:

शिक्षा का उदेश्य बालक को शिक्षित कर एक कुशल नागरिक का निर्माण करना है। शिक्षा मानव को सभ्य, सुसंस्कृत व सामाजिक रूप से समायोजित होने में सक्षम बनाती है। एक सुसमायोजित व्यक्ति ही विभिन्न परिस्थितियों में अपने दायित्वों का ठीक ढंग निर्वहन से कर सकता है। समायोजन की इस प्रक्रिया में शिक्षा व शिक्षा प्रक्रिया के विनिन्न अवयव महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हुए व्यक्ति के व्यक्तित्व व व्यव्हार पर प्रभाव डालते है। वर्तमान समय के आधुनिक तकनीकी संसार में शिक्षा का महत्त्व और अधिक बढ़ गया है। इसलिए हमारी शिक्षा व्यवस्था के अन्तर्गत आने वाले सभी पक्षो पर विशेष ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है। जिससे प्रत्येक व्यक्ति सफलता पूर्वक अपने सामाजिक, आर्थिक व अन्य सभी प्रकार के उत्तरदायित्वों का निर्वहन करते हुए कुशलतापूर्वक अपना जीवन व्यतीत कर सके।

इस प्रकार शिक्षित व्यक्ति वातावरण के साथ समायोजित होकर अपने अन्दर कुशलताओं की वृद्धि करते हुए समाज व राष्ट्र के लिए कुशल नागरिक भी साबित होता है। इस सबके लिए हमारी शिक्षा व्यवस्था व शिक्षण अधिगम रणनीतियों का समय, परिस्थिति व शिक्षार्थियों के अनुरूप होना नितांत आवश्यक है। क्योकि हमारे देश की भौगोलिक विविधता के कारण व्यक्ति ने आदि काल से विभिन्न परिस्थितियों और अवस्थाओ में जीवन निर्वाह करते हुए विभिन्न प्रकार के समाजों का निर्माण किया है। जिनको ध्यान में रखकर ही सभी प्रकार की शैक्षिक व्यवस्थाओं का निर्माण किया जाना चाहिए। जिससे समाज के सभी वर्गों व श्रेणियों के लोगों को शिक्षा का लाभ मिल

सके। इसी सन्दर्भ में **इन्दुबाला (2018)** ने कहा है कि भारतीय शिक्षा व्यवस्था पर एक वृहत जनसमूह को शिक्षित करने का दायित्व है जिससे जनमानस के व्यक्तित्व का विकास कर देश और समाज को विकास की दिशा में अग्रसर कर उन्नति के लक्ष्य को हासिल किया जा सके।

लेकिन कई बार प्राकृतिक अथवा अप्राकृतिक कारणों से बच्चों की सामान्य अवस्था में कुछ अनैच्छिक परिवर्तन आ जाते हैं, जिसके कारण बच्चों के सामान्य क्रियाकलापों में आंशिक अथवा गंभीर क्षति के कारण बाधा, रुकावट या असमर्थता उत्पन्न हो जाती है। इस प्रकार सामान्य बच्चे विकलांग बच्चों की श्रेणी में चले जाते हैं। अतः बच्चों के कार्यकलापों में आई बाधा उनके सामर्थ्य को कम कर देती हैं, जिससे इस तरह के बच्चे नि:शक्त अथवा विकलांग बन जाते हैं। **विश्व स्वास्थ्य संगठन (1976)** के अनुसार विकलांगता व्यक्ति के कार्यकारी प्रदर्शन एवं गतिविधियों के ह्रास का परिणाम है।

वर्तमान समय में विशेषता/विकलांगता के आधार पर बच्चों को 21 विभिन्न श्रेणियों में विभाजित किया गया है, जो कि पूर्व में 8 प्रकार की ही थी। जिस कारण से भारत में निःशक्त/ विकलांग/दिव्यांग लोगों की तादात बहुत अधिक हो गई है। इसी सन्दर्भ में **दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग (दिव्यांगजन) सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय, भारत सरकार के अनुसार** 2011 की जनगणना में भारत में विकलांगों की संख्या 2.68 करोड़ है, जो कि सम्पूर्ण जनसंख्या का लगभग 3 प्रतिशत है।

दिव्यांग बच्चों को सामान्य जीवन जीने, मुख्य सामाजिक धारा में लाने के लिए और आवश्यक जीवनोपयोगी कौशलों का विकास करने की दिशा में शिक्षा की भूमिका महत्वपूर्ण है। इसलिए दिव्यंगों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना परम आवश्यक है। जिससे वह अधिकतम सामान्य रूप से अपने जीवन को व्यतीत कर सकें तथा अपनी कार्यकुशलता को बढाकर अपने जीवन में सामाजिक और आर्थिक पक्षो के साथ अन्य दायित्वों का निर्वहन कर सकें और समाज में सम्मान के साथ जीवन जीने में सक्षम हो जाए। इसलिए प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रयोगात्मक शोध प्रविधि का उपयोग करते हुए लोकोमोटर दिव्यांग छात्रों पर बहुमाध्यम उपागम के प्रभाव को जानने का प्रयास किया गया है मानवाधिकारों व भारतीय संविधान की धारा 21(क) के अनुसार राज्य का दायित्व है कि वह अपने नागरिकों के लिए बिना भेदभाव के उचित शिक्षा की व्यवस्था करे। इस प्रकार शिक्षा सभी असमानताओं (जैसे- सामाजिक,आर्थिक व व्यक्तिगत) को दूर या कम करने में भी सक्षम है। जिससे व्यक्ति अपने जीवन को अधिकतम सामान्य रूप में व्यतीत करते हुए एक कुशल नागरिक बन कर राष्ट्रीय उन्नति में प्रतिभाग कर सकें।

समावेशी शिक्षा एक दर्शन और दृष्टिकोण है जिसका उद्देश्य विकलांग छात्रों सहित सभी छात्रों को मुख्यधारा की शैक्षिक व्यवस्था के भीतर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करने के समान अवसर प्रदान करना है। यह इस विचार को बढ़ावा देता है कि प्रत्येक छात्र, उनकी क्षमताओं या अक्षमताओं की परवाह किए बिना, उपयुक्त शैक्षिक संसाधनों, सहायक सेवाओं और एक सहायक सीखने के माहौल तक पहुंच होनी चाहिए।

इस प्रकार इन्हें गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करके अधिक सामान्य और कार्यकुशल बनाने के लिए प्रभावशाली विधियों/उपागमों का प्रयोग किया जाना नितांत आवश्यक है। जिसके अन्तर्गत शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया को और अधिक प्रभावशाली बनाते हुए दिव्यांग छात्रों को अधिकतम सीखने समझने में समर्थ बनाया जा सके। वर्तमान समय में शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को और अधिक प्रभावशाली बनाने में बहुमाध्यम उपागम/ मल्टीमीडिया का बहुत महत्व है।

बहुमाध्यम उपागम से तात्पर्य किसी प्रकरण को और अधिक स्पष्ट करने के उद्देश्य से पाठ्य सामग्री का विविध रूपों में प्रयोग करना है। शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में संचार की आधुनिक तकनीकों का विधिवत एवं सुचारू रूप से शिक्षा के क्षेत्र में प्रयोग करना जिससे शिक्षा प्रक्रिया को सुधार कर अधिगम को और अधिक प्रभावशाली बनाया जा सके। इसी सन्दर्भ में **बेह,अल्मार हिलाल एवं अन्य (2015)** के अनुसार मल्टीमीडिया तकनीक छात्रों एवं शिक्षकों व श्रोताओं एवं प्रस्तुतकर्ताओं के बीच बातचीत के माध्यम से शैक्षिक प्रक्रिया को सशक्त बनाता है तथा यह कक्षा के भीतर व बाहर की दुनिया से और अधिक अभिनव तरीके से सीखने को स्थाई को प्रभावशाली बनाने में सहायक है।

2. प्रयुक्त पदों का परिभाषीकरण:

2.1 बहु माध्यम उपागम:

मल्टीमीडिया उपागम सूचना देने या दर्शकों के साथ जुड़ने के लिए मीडिया या संचार साधनों के कई रूपों के उपयोग को संदर्भित करता है। इसमें अधिक गतिशील और जीवन्त अनुभव बनाने के लिए विभिन्न प्रकार के मीडिया,

जैसे टेक्स्ट, इमेज, ऑडियो, वीडियो और इंटरैक्टिव तत्वों को जोड़ना शामिल है। बहुमाध्यम उपागम के लाभों में दर्शकों/ छात्रों की संलग्नता में वृद्धि, सूचना का बेहतर प्रतिधारण, विभिन्न सीखने की शैलियों को पूरा करने की क्षमता और अधिक सम्मोहक और वास्तविक अनुभवों का निर्माण शामिल है।

2.2 दिव्यांग विद्यार्थी:

ऐसे विद्यार्थी जो शारीरिक व मानसिक रूप से 40 प्रतिशत से अधिक नि:शक्त/ अक्षम है, दिव्यांग की श्रेणी में शामिल किए जाते हैं। वर्तमान समय में दिव्यंगता को 21 श्रेणियों में बांटा गया है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में लोकोमोटर दिव्यंगता के अन्तर्गत आने वाले छात्रों को शामिल किया गया है।

2.3 शैक्षिक उपलब्धि:

दिव्यांग विद्यार्थियों द्वारा अपने किसी अकादमिक सत्र के पाठ्यक्रम में अकादमिक सफलता प्राप्त करने की क्षमता के स्तर को संदर्भित करता है।

3. अध्ययन की आवश्यकता:

प्रस्तुत शोध अध्ययन बहु माध्यम उपागम का दिव्यांग विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभावशीलता का अध्ययन के माध्यम से दिव्यांग बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि पर बहु माध्यम उपागम के प्रभावों का अध्ययन किया जायेगा।आंकड़ो से प्राप्त परिणामों के आधार पर बहु माध्यम उपागम के संदर्भ में सुझाव प्रस्तुत किया जा सकेगा। जिससे उनकी शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को और अधिक प्रभावी बनाया जा सकेगा तथा दिव्यांग विद्यार्थियों की शिक्षा में लगे शिक्षकों को उपयुक्त अनुदेशन उपागम की समझ हो सकेगी, और दिव्यांग विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त होगी जो उनको और अधिक सामान्य जीवन जीने में मदद करेगी। जिससे दिव्यांग बच्चों को मुख्य सामाजिक एवं शैक्षणिक धारा में लाने का कार्य आसान हो सकेगा।

4. महत्व:

प्रस्तुत शोध अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षों से हमारे समाज व देश दिव्यांग विद्यार्थियों की शिक्षा में सुधार के माध्यम से शिक्षा के सार्वभौमिकरण के लक्ष्यों को शीघ्रातिशीघ्र प्राप्त किया जा सकेगा। तथा इसके दायरे में आने वाले सभी दिव्यांग बच्चों, शिक्षकों, अभिभावकों, शिक्षण संस्थाओं, शासन, प्रशासन को भी प्रस्तुत शोध से लाभ व मार्गदर्शन प्राप्त होगा। जो हमारे समाज व देश के लिए लाभकारी व कल्याणकारी सिद्ध होगा।

5. समस्या कथन:

बहु माध्यम उपागम का दिव्यांग विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभावशीलता का अध्ययन।

6. शोध उद्देश्य:

1. बहु माध्यम उपागम का दिव्यांग विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना
2. बहु माध्यम उपागम की उपयोगिता का विश्लेनात्मक अध्ययन करना।

7. परिकल्पनाए:

1. दिव्यांग विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर बहु माध्यम अनुदेशात्मक उपागम और सामान्य अनुदेशात्मक उपागम का अन्तर नहीं है।

8. परिसीमन:

1. प्रस्तुत शोध अध्यन उत्तर प्रदेश के लखनऊ जनपद तक सीमित है।
2. प्रस्तुत शोध अध्यन उत्तर प्रदेश के लखनऊ जनपद के लोकोमोटर दिव्यांग विद्यार्थियों तक ही सीमित है।

9. शोध प्रविधि:

प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु प्रयोगात्मक अनुसन्धान विधि का प्रयोग किया गया है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में इतिहास विषय के (यूरोपियों का भारत में आगमन नामक) शीर्षक का लोकोमोटर दिव्यांग विद्यार्थियों के प्रथम समूह का 2 सप्ताह तक परम्परागत अनुदेशन उपागम के माध्यम से शिक्षण कार्य कराया गया तथा दूसरे लोकोमोटर दिव्यांग विद्यार्थियों के समूह का 2 सप्ताह तक बहु माध्यम उपागम से शिक्षण कार्य कराया गया।

9.1 जनसंख्या:

प्रस्तुत शोध अध्ययन में उत्तर प्रदेश के लखनऊ जनपद के विशेष विद्यालय (राजकीय प्रयास विद्यालय) में अध्ययनरत लोकोमोटर दिव्यांग छात्रों को जनसंख्या के रूप में चयनित किया गया है।

9.2 प्रतिदर्श:

प्रस्तुत शोध अध्ययन में उत्तर प्रदेश के लखनऊ जनपद के विशेष विद्यालय (राजकीय प्रयास विद्यालय) में अध्ययनरत लोकोमोटर दिव्यांगता से ग्रसित जनसंख्या में से 30 छात्रों को प्रतिदर्श के रूप में चयनित किया गया है।

9.3 आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या:

Table no. (1)

Sample	N	M	S	D	Sig ma D	t	Significa nce level
Experime ntal Group	1 5	17. 00	.8 45	2	0.02 91	6.8 31	.05
Controlle d Group	1 5	15. 00	.7 56				

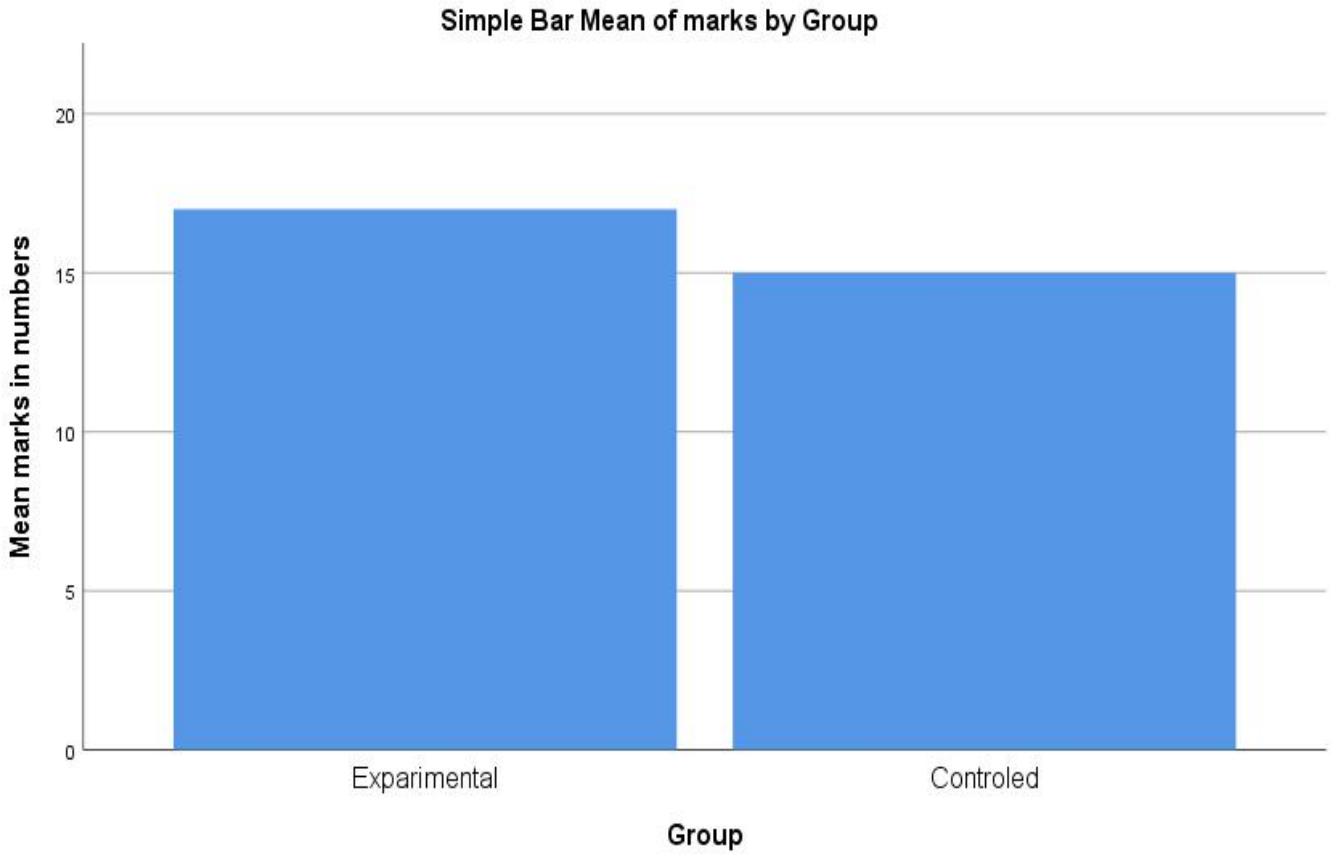

Graph No. (1)

9. निष्कर्ष:

परिगणित t = 6.831 का मान df =28 के लिए t.05= 2.05 तथा t.01 = 2.76 दोनों से ही अधिक है, जो कि दोनों ही स्तरों पर सार्थक है। परिणामतः शून्य परिकल्पना H० को अस्वीकार किया जाता है, और वैकल्पिक परिकल्पना को स्वीकार किया जाता। इस प्रकार नियंत्रित शिक्षण समूह (परम्परागत शिक्षण समूह) के विद्यार्थियों एवं प्रयोगात्मक शिक्षण समूह (बहुमाध्यम उपागम शिक्षण समूह) के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर पाया गया। अतः सिद्ध होता है कि बहुमाध्यम उपागम शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के लिए परम्परागत उपागम से अधिक उपयुक्त एवं प्रभावशाली है।

10. शैक्षिक निहितार्थ:

प्रस्तुत शोध अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि लोकोमोटर दिव्यांग विद्यार्थियों की शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में यदि बहुमाध्यम उपागम का अधिकाधिक प्रयोग किया जाये तो छात्र अपनी अध्ययन सामग्री/प्रकरण को अधिक अच्छे ढंग तथा स्थाई तौर पर सीख/समझ सकेंगे। जिससे इनकी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा इन्हें स्वयं के जीवन को सामान्य रूप में जीने में मददगार साबित होगी तथा उनकी क्षमता में वृद्धि होगी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:

1. बाला,इन्दु (2018). वर्तमान भारत में शिक्षा की दशा और दिशा. *परिपेक्स- इंडियन जर्नल ऑफ़ रिसर्च.* 7(2). 37-38 https://www.worldwidejournals.com/paripex/article/vartaman-bharat-me-shiksha-ki-dasha-aur-disha/ODgxMg==/?is=1
2. बेह,अल्मार हिलाल एवं अन्य (2015). शिक्षा में मल्टीमीडिया उपकरणों की प्रभावशीलता. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ एडवांस्ड रिसर्च इन कंप्यूटर साइंस एंडसॉफ्टवेयर इंजिनीअरिंग.* 5.(12). 761-764
3. दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग(दिव्यांगजन) सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय, भारत सरकार http://www.ccdisabilities.nic.in/hi/resources/disability-india http
4. कुमारी,कमलेश (2022). बहुमाध्यम उपागम का विद्यार्थियों के व्यक्तित्व एवं शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ क्रिएटिव रिसर्च थॉट. 10(5). 182-184 https://ijcrt.org/papers/IJCRTQ020035.pdf
5. सोनी.दीप्ति एवं अन्य (2021). मल्टीमीडिया उपयोग के शिक्षण और सीखने पर प्रभाव. *जर्नल ऑफ़ एडवांस एंडस्कॉलरली रिसर्चेस इन अलाइड एजुकेशन.* 18(5) https://ignited.in/I/a/306269
6. सिंह,टीकम एवं अन्य (2019). अस्थि अक्षम विद्यार्थियों के शैक्षिणिक उपलब्धियों का अध्ययन. *जर्नल ऑफ़ एडवांस एंडस्कॉलरली रिसर्चेस इन अलाइड एजुकेशन.* 16(4) http://ignited.in/I/a/242307
7. अमित्सौम्य एवं सिंह,वंदना (2019). सामान्य एवं अस्थि दिव्यांग बालक बालिकाओं के सामाजिक एवं संवेगात्मक समायोजन का अध्ययन. *श्रंखला एक शोधपरक वैचारिक पत्रिका* 6.(8) http://socialresearchfoundation.com/upoadreserchpapers/3/298/1911221225151st%20amit%20saumya.pdf
8. कोठारी,सी.आर. एवं अन्य (2023). शोध पद्दति. न्यू ऐज इंटरनेशनल पब्लिशर्स. नई दिल्ली. पेज. 153-171
9. गुप्ता, एस.पी. (2017). अनुसंधान संदर्शिका संप्रत्यय, कार्यविधि एवं प्रविधि. शारदा पुस्तक भवन. इलाहाबाद. पेज. 345-362